● **पढ़ो और दोहराओ :**

३. खिचड़ी

एक बार बादशाह अकबर ने घोषणा की – 'जो कोई ठंड में रात भर महल के निकट तालाब के पानी में खड़ा रहेगा, उसे इनाम दिया जाएगा ।' घोषणा सुनकर बहादुर नाम के एक

आदमी ने ठंड में रात भर तालाब में खड़े रहने का कारनामा कर दिखाया । बादशाह ने जानना चाहा कि इतनी ठंड में वह पानी में कैसे खड़ा रहा ? बहादुर ने आदर से कहा, ''बादशाह सलामत ! मैं रात भर आपके महल के सामने जलते दीपक देखता रहा ।'' बादशाह को लगा कि महल के जलते दीपों से उसे गरमी मिली है । अतः उन्होंने उस आदमी को इनाम नहीं दिया । दूसरे दिन दरबार में बीरबल के न दीखने पर बादशाह ने एक सेवक को उनके घर भेजा । सेवक ने आकर बताया, ''जहाँपनाह ! बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं ।'' दूसरे दिन भी बादशाह को वही जवाब मिला । तब बादशाह स्वयं बीरबल के घर पहुँचे ।

बीरबल ने बाँस गाड़कर आँच से काफी ऊँचाई पर हँड़िया टाँगकर उसमें खिचड़ी पकाने के लिए रखी थी । बादशाह अकबर ने पूछा, ''बीरबल, खिचड़ी की हँड़िया इतनी ऊपर लटकाई है, वहाँ तक आँच कैसे पहुँचेगी ? '' बीरबल ने कहा, ''जब महल के सामनेवाले दीपों की गरमी बहादुर को मिल सकती है तो इस आँच पर मेरी खिचड़ी भी पक सकती है ।'' बादशाह सब समझ गए । वे मुस्कुरा उठे । दूसरे दिन उन्होंने बहादुर को बुलाकर इनाम दिया । इस तरह बीरबल ने बहादुर के साथ हुए अन्याय को दूर करवाया ।

किसने–किससे कहा, बताओ :

१. ''मैं रात भर आपके महल के सामने जलते दीपक देखता रहा ।''
२. ''बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं ।''
३. ''वहाँ तक आँच कैसे पहुँचेगी ?''
४. ''दीपों की गरमी बहादुर को मिल सकती है तो इस आँच पर मेरी खिचड़ी भी पक सकती है ।''

K7FN79

❑ कहानी तीन–चार बार पढ़वाएँ । विद्यार्थियों से मौन वाचन करने के लिए कहें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के आशय पर चर्चा करें । बीरबल की मानवता, न्यायबुद्धि और चतुराई की सीख समझाएँ तथा व्यवहार में इनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें । वाक्यों में आए 'के', 'में', 'की', 'को' और 'से' आदि कारक चिह्नों पर चर्चा करके वाक्यों में उनका प्रयोग करवाएँ ।